

शिक्षा में डिजिटल अंतराल

प्रलम्ब के लिये:

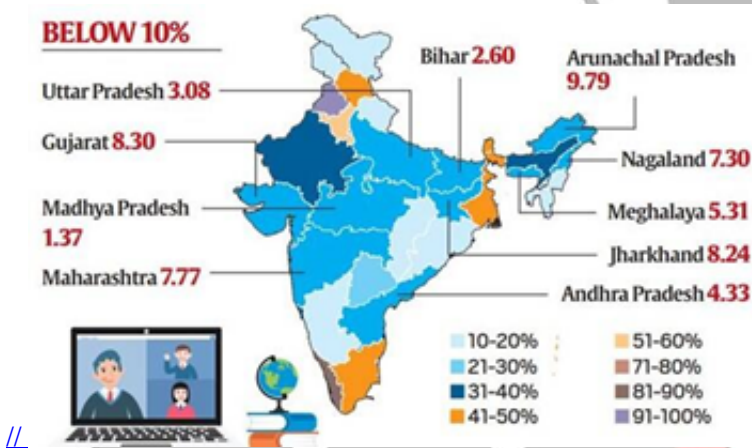
डिजिटल अंतराल, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, शिक्षा का अधिकार, अनुच्छेद 21 ए।

मेन्स के लिये:

शिक्षा में डिजिटल अंतराल, इसका प्रभाव और आगे का रास्ता।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में शिक्षा मंत्री ने लोकसभा को सूचित किया कि भारत के कम-से-कम 10 राज्यों में 10% से कम स्कूल [सूचना और संचार प्रौद्योगिकी \(ICT\)](#) उपकरण या डिजिटल उपकरण से लैस हैं।



आईसीटी उपकरण:

- शिक्षण और सीखने के लिये आईसीटी उपकरण में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैसे- प्रिंटर, कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट आदि से लेकर गूगल मीट, गूगल स्प्रेडशीट आदि जैसे सॉफ्टवेयर उपकरण तक शामिल हैं।
- यह उन सभी संचार तकनीकों को संदर्भित करता है जो डिजिटल रूप से सूचना तक पहुँचने, पुनः प्राप्त करने, संग्रहीत करने, संचारित करने और संशोधित करने के उपकरण हैं।
- आईसीटी का उपयोग केबलिंग की एक एकीकृत प्रणाली (सिग्नल वितरण और प्रबंधन सहित) या लॉक सिस्टम के माध्यम से मीडिया प्रौद्योगिकी जैसे ऑडियो-विज़ुअल और कंप्यूटर नेटवर्क के साथ टेलीफोन नेटवर्क के अभिसरण को संदर्भित करने के लिये भी किया जाता है।
- हालाँकि यह देखते हुए कि आईसीटी में शामिल अवधारणाएँ, तरीके और उपकरण लगभग दैनिक आधार पर लगातार विकसित हो रहे हैं, आईसीटी की कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा नहीं है।

डिजिटल अंतराल:

- परिचय:**
 - यह जनसांख्यिकी और आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तक पहुँच वाले क्षेत्रों और उन तक पहुँच नहीं होने के बीच का अंतर है।

- यह वकिसति और वकिसशील देशों, शहरी तथा ग्रामीण आबादी, युवा एवं शकिसति बनाम वृद्ध और कम शकिसति व्यक्तियों, पुरुषों और महलियाओं के बीच मौजूद है।
- भारत में शहरी-ग्रामीण वभिजन डजिटिल अंतराल का सबसे बड़ा कारक है।

■ स्थिति:

- **अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा 2021 में** कयि गए एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में लगभग 60% स्कूली बच्चे ऑनलाइन सीखने के अवसरों का उपयोग नहीं कर सकते हैं।
- ऑक्सफैम इंडिया के एक अध्ययन में पाया गया कि शहरी नज्दी स्कूलों के छात्रों के माता-पिता ने इंटरनेट सिग्नल और स्पीड के साथ समस्याओं की सूचना दी।

■ प्रभाव:

- **ड्रॉपआउट और बाल श्रम के कारण:**
 - **‘आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों’** [EWS]/वंचित समूहों [DG] से संबंधित बच्चों को अपनी शकिसा पूरी नहीं करने का परणाम भुगतना पड़ रहा है, साथ ही इस दौरान इंटरनेट और कंप्यूटर तक पहुँच की कमी के कारण कुछ बच्चों को पढ़ाई भी छोड़नी पड़ी है
 - वे बच्चे **बाल श्रम** अथवा बाल तस्करी के प्रती भी सुभेद्य हो गए हैं।
- **गुणवत्तापूर्ण शकिसा का अभाव:**
 - यह लोगों को उच्च/गुणवत्तापूर्ण शकिसा और कौशल प्रशकिसण से वंचित करेगा जो उन्हें अर्थव्यवस्था में योगदान करने और वैश्विक स्तर पर मार्गदर्शक नेता में मदद कर सकता है।
- **अनुचित प्रतिसिपर्द्धा को बढ़ावा:**
 - शकिसा के संबंध में ऑनलाइन प्रस्तुत की गई महत्त्वपूर्ण जानकारी से वंचित बने रहेंगे और इस प्रकार वे हमेशा पछिड़े ही रहेंगे, जसि खराब प्रदर्शन के रूप में अभिविकृत कयि जा सकता है।
 - इस प्रकार इंटरनेट का उपयोग करने में सक्षम छात्र और कम वशिषाधिकार प्राप्त छात्रों के बीच अनुचित प्रतिसिपर्द्धा को बढ़ावा मलित है।
- **सीखने की असमानता:**
 - नमिन सामाजिक-आर्थिक वर्गों के लोग वंचित हैं और पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा करने के लयि उन्हें लंबे समय तक बोझलि अध्ययन से गुजरना पड़ता है।
 - जबकि अमीर आसानी से स्कूली शकिसा सामग्री को ऑनलाइन एक्सेस कर सकते हैं और अपने कार्यक्रमों पर तुरंत काम कर सकते हैं।

शकिसा के अधिकार हेतु संवैधानिक प्रावधान

- मूल भारतीय संवधान के **भाग- IV (राज्य के नीतिनिर्देशक सिद्धांत -DPSP)** के अनुच्छेद 45 और अनुच्छेद 39 (f) में राज्य द्वारा वक्तितपोषति समान और सुलभ शकिसा का प्रावधान कयि गया।
- वर्ष 2002 में 86वें संवैधानिक संशोधन से शकिसा के अधिकार को संवधान के भाग- III में एक मौलिक अधिकार के तहत शामिल कयि गया।
 - इसे **अनुच्छेद 21A** के अंतर्गत शामिल कयि गया, जसिने 6-14 वर्ष के बच्चों के लयि शकिसा के अधिकार को एक मौलिक अधिकार बना दयि।
 - इसने एक अनुवर्ती कानून **शकिसा के अधिकार अधिनियम, 2009** का प्रावधान कयि।

संबंधित पहल

- [राष्ट्रीय शकिसा नीति, 2020](#)।
- [ज्ञान साझा करने हेतु डजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर \(DIKSHA\)](#)।
- [पीएम ई-वदिया](#)।
- [सवयं प्रभा टीवी चैनल](#)
- [सवयं पोर्टल](#)
- [प्रोद्योगिकी हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक गठबंधन \(NEAT3.0\)](#)

आगे की राह:

- **आर्थिक रूप से वहनीय, उपयोग में आसान** प्रोद्योगिकियों को सुनिश्चित करके सरकार डजिटल अंतराल को प्रभावी रूप से कम कर सकती है। इंटरनेट कनेक्टिविटी की उच्च लागत, तकनीकी उपकरणों की कीमत, वदियुत् शुल्क व कर शकिसकों और छात्रों दोनों के लयि डजिटल अंतराल को बढ़ाने में प्रमुख कारक की भूमिका नभिते हैं।
- **इंटरनेट और आधुनिक तकनीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लयि शकिसकों और छात्रों को समग्र रूप से प्रशकिसति** करने की आवश्यकता है। जतिने कम छात्र इन उपकरणों का उपयोग करेंगे डजिटल अंतराल उतना ही बढ़ता जाएगा।
- शैक्षिक ऑनलाइन सामग्री नरिमाताओं को **अधिक-से-अधिक भाषाओं में जानकारी उपलब्ध** कराने का लक्ष्य रखना चाहयि। जब उपयोगकर्ताओं को वशिवास होता है कि वे अपनी मूल या स्थानीय भाषाओं में सामग्री देख सकते हैं, तो वे समान डजिटल उपकरणों का उपयोग करने के लयि प्रेरित होते हैं।

- लैंगिक आधार पर डिजिटल अंतराल को कम करने की विशेष ज़रूरत है। इंटरनेट तक पहुँच में वदियमान बाधाएँ महिलाओं और बालिकाओं द्वारा समुदायों और देश की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में पूर्ण भागीदारी प्रदान करने में बाधा डालती हैं।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/digital-gap-in-education>

